सावित्री शर्मा 'सवि'

देहरादून, उत्तराखंड

ब्लागर की महिमा

आज कल वीडियो व्लोगर की ही दुनिया है ।सुबह से शाम स्वयं की प्रदर्शनी कीजिए ।खूब शोहरत पाइए ,साथ ही पाइए शोहरत के दाम भी यानी पैसा ,वही पैसा जिसके लिये कहा जाता है ,राम राम जपना पराया माल अपना ,ना बंधु ना अब राम राम कर दूसरों का माल हड़प कर पाप कमाने की ज़रूरत ही नहीं है । जब आप स्वयं काबिल हो भले ही पढ़े लिखे ना हो ,आपको रत्ती भर भी अक्ल ना हो सब आपको बचपन से नकारा कहते हों पर अब वो दिन लद गए हैं ।अब आप जैसे बेवकूफ़ो का ही जमाना है पढ़े लिखे तो इस दरवाज़े से उस दरवाज़े अपनी बुद्धि के साथ डिग्रियों की रद्दी लिए घूमते हैं ।फिर दुत्कार दिये जाते है क्यों की अब इन काले अक्षरों में कुछ नहीं रखा है ।अब है जम कर बेवकूफ़ी का जमाना ।हाँ आपके पास एक अदद बढ़िया सा फ़ोन हो और साथ में नये ब्रांड के कपड़े हों कपड़े नये ना भी हो भाई सालों पुरानी फटी जींस तो होगी ,अब फटे कपड़े भिखारियों के नही होते हैं ।ये भी भूतपूर्व बात हो गई है वो तो तमीज़ से साबुत कपड़े पहन कर भीख माँगते है ।फटे पहन कर तो लगेगा स्टेट्स वालों से मुक़ाबला कर रहा है फिर भीख तो गई पानी में ।जलील होना पड़ेगा अलग से ।और थोड़ा आड़े तिरछे मुँह बनाने तो आते ही होंगे , तो हो गया बस नहले पर दहला । बन गये आप फर्राटेदार व्लोगर ।होगी धड़ल्ले से कमाई आपको पढ़ने लिखने के झंझट से भी मुक्ति मिल गई ।छेदी भैया की तो आज कल चाँदी ही चाँदी है ।पहले हर जगह उपेक्षा के शिकार होते थे ।वो क्या है कोई नौकरी नहीं थी मगर जब से व्लोगर बने हैं ,पत्नी की आँखों के तारे बन गये है जो दुनियाँ का सबसे नामुमकिन काम था ,वो कर दिखाया है ।भला हो ब्लॉगर देवता का घूरे के भी दिन फिर गये हैं ।सच है आप अगर कूड़ा भी दिखायेंगे , कैसे कूडा सड़ता है उसमें बदबू अरे नहीं महक कहिए इसका वर्णन आपके मुख कमलों से होगा तो बस करोड़ों की संख्या में लाइन शेयर आयेंगे ।पढ़ी लिखी या ज्ञान जैसे विषय की अब कोई उपयोगिता ही नहीं ,आज की ज़ेन जी जनरेशन के अपने ख्याल अपने नियम हैं ।तो अब ब्लॉगर यूनिवर्सिटी खुलनी चाहिए , सरकार को अनुदान देना चाहिए ।लोग बिस्तर छोड़ कर कामकाजी हो गये हैं ।बज़ट में कैमरे को विशेष तौर पर सस्ता किया जाना चाहिए ,इनकम टेक्स वालों को इन ब्लॉगर्स को टेक्स में छूट देनी चाहिए जिससे ब्लॉगर का पवित्र व्यवसाय फले फूले लोग देखे की कैसे उठा बैठा खाँसा जाता है ।आपके माता पिता आपको उठना बैठना नहीं सीखा पाए ,अध्यापक की भूमिका भी अधूरी रह गई इस लिए अब इनकी बातें कोई नहीं सुनता है । अब तो बिना ब्लॉग देखे ज़िंदगी कोई ज़िंदगी नहीं है ,पता नहीं ठीक से कुछ कर भी पाते हैं सीधे खड़े होने का भी ज्ञान है या नहीं ।सब सोचना पड़ेगा ।अगला ओलंपिक कही व्लोग पर तो नहीं हो रहा है ।क्यों कि आज कल खेल और पढ़ाई से ज़्यादा बच्चे व्लोगर बनने की ट्रेनिंग लेते पाये जाते हैं ।आप स्वयं को परखिए और ब्लॉगर बनने की होड़ या प्रतिस्पर्धा में भाग लीजिए ,वरना ऐसे ही मर गए तो क्या पता भगवान नर्क में भेज दें कि तुमने ब्लॉगर बनाने का पुण्य तो किया ही नहीं है मोक्ष कैसे पाओगे ,वापिस जाओ और किसी दक्ष ब्लॉगर से हंसना कपड़े धोना घर सफाई मंजन करना ,बाज़ार से सब्जी लाना सब सीख कर आओ वरना गर्म कढ़ाई में तल दिए जाओगे ।संस्कार की बात बीच में मत लाइए ।ये तो भूले से नहीं मिलते हैं ।तो ब्लॉगर देवता की जय हो ,बाकी सब व्यर्थ है ।दुनियाँ फ़ानी है ।